मुश्किल दौर में आगे बढ़ने के 7 रहस्य

विली जॉली

संकट ही सफलता की नींव है के बेस्टसेलिंग लेखक

अनुवाद : डॉ. सुधीर दीक्षित

Hindi translation of *Turn Setbacks into Greenbacks!*

मुश्किल दौर में आगे बढ़ने के 7 रहस्य

विली जॉली

संकट ही सफलता की नींव है के बेस्टसेलिंग लेखक

अनुवाद : डॉ. सुधीर दीक्षित

Hindi translation of *Turn Setbacks into Greenbacks!*

विली जॉली ने लोगों को शक्तिशाली बनाने वाली एक और मार्गदर्शिका लिख दी है, जो आपको 'पराजय के मुख से विजय को खींचने' में सक्षम बनाएगी। सही समय पर आई यह ज़बर्दस्त बचाव पुस्तिका आपकी दृष्टि का विस्तार करेगी और आपको सिखाएगी कि वहाँ कैसे सफल हों, जहाँ दूसरे असफल हो रहे हैं। यह विपत्तियों को संपत्तियों में बदलने के लिए आवश्यक मानसिकता और योग्यताएँ विकसित करने में आपकी मदद करेगी।

—लेस ब्राउन, बेस्टसेलिंग लेखक,
पुरस्कार विजेता वक्ता और टेलीविज़न तथा रेडियो हस्ती

यह पुस्तक परिवर्तन और चुनौती से, गर्व और शक्ति से, महत्त्व और सफलता से भरी है। विली जॉली भावनात्मक शक्ति के स्रोत हैं, जिनकी ऊर्जा इस अद्भुत पुस्तक से बाहर छलकती है। जब आप इसे खोलते हैं, तो आप अकल्पनीय विकल्पों का उत्साह महसूस करेंगे और जब आप इसे बंद करते हैं, तो आप अपने तथा अपने आस-पास के लोगों के हित में अपना जीवन बदलने के लिए ऊर्जावान महसूस करेंगे।

—ऐलन वाइस, पीएच डी,
मिलियन डॉलर कन्सल्टिंग ऐंड थ्राइव! के
लेखक

इस पुस्तक में विली जॉली व्यक्तिगत तथा पेशेवर सफलता और दौलत बनाने के विषय पर छक्का मारते हैं। इसे पढ़ें तथा दोबारा पढ़ें... और फिर अपनी जान-पहचान के हर व्यक्ति से कहें कि वह इसकी प्रति लेकर पढ़े! इस तरह आपकी जान-पहचान का हर व्यक्ति अपनी दौलत बढ़ा लेगा!

—लैरी विंगेट, टेलीविज़न हस्ती और
यू आर ब्रोक बिकॉज़ यू वान्ट टु बी और
युअर किड्स आर युअर ओन फ़ॉल्ट के बेस्टसेलिंग लेखक

विली जॉली संसार के लोगों की दौलत बढ़ाने के लिए समर्पित हैं और यह पुस्तक इस समर्पण का सच्चा उदाहरण है! इसे पढ़ें, और आप अपनी सफलता तथा दौलत को बढ़ाने के लिए प्रेरित और सशक्त बन जाएँगे!

—केल्विन बॉस्टन, पीबीएस-टीवी पर मनीवाइज़ सीरीज़
के मेज़बान और *हू इज़ अफ़्रेड टु बी अ मिलियनेअर?*
के लेखक

विली जॉली ने *टर्न सेटबैक्स इनटु ग्रीनबैक्स* पुस्तक लिखी है, जो ज़्यादा बड़ी सफलता और उपलब्धि के लिए आपको सशक्त बनाएगी और प्रेरित करेगी! मैं इस पुस्तक को पढ़ने की बहुत अनुशंसा करता हूँ!

—वॉली एमॉस, बेस्टसेलिंग लेखक, वक्ता,
सकारात्मक चिंतक और
किंग काहुना कुकी कंपनी के संस्थापक

मुश्किल दौर में आगे बढ़ने के 7 रहस्य

विली जॉली

अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित

MANJUL

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

मंजुल पब्लिशिंग हाउस
कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय
द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462 003
विक्रय एवं विपणन कार्यालय
7/32 , भू तल, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
वेबसाइट: www.manjulindia.com
वितरण केन्द्र
अहमदाबाद, बेंगलुरू, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

विली जॉली द्वारा लिखित मूल अंग्रेजी पुस्तक
टर्न सेटबैक्स इन्टू ग्रीनबैक्स का हिन्दी अनुवाद

कॉपीराइट © 2015 विली जॉली
सर्वाधिकार सुरक्षित

यह हिन्दी संस्करण 2016 में पहली बार प्रकाशित

ISBN 978-81-8322-726-1

हिन्दी अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुन: प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीक़े से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

समर्पण

मैं यह पुस्तक अपनी संतानों लटोया और विलियम को समर्पित करता हूँ। साथ ही मेरे भाई की संतानों विक्टर, विन्सेंट, राशिदा, विवियन, क्रिस्टीना, नोबल जूनियर और नैथन को, जो उनके पिता (मेरे भाई) के गुज़रने के बाद मेरी संतान बन गए।

मैंने आपमें से प्रत्येक को दौलत बनाने के सिद्धांत सिखाने का सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप उनका इस्तेमाल करेंगे और आने वाली पीढ़ियों को बताने का संकल्प लेंगे!

मैं यह पुस्तक अपने परिवार के उन सदस्यों को भी समर्पित करता हूँ, जो मेरी पिछली पुस्तक के बाद यह संसार छोड़कर जा चुके हैं। मेरी माँ कैथरीन बी जॉली को, मेरे भाई नोबल जॉली, सीनियर को, मेरे ससुर रेवरेंड रिवर्स एस टेलर, सीनियर को और मेरी आंटी युनिस रैगलैंड को...

मैं यह निजी और सार्वजनिक तौर पर कहता हूँ, "मैं इस बात पर शोक मना सकता हूँ कि आप चले गए हैं, लेकिन मैं इस बात का जश्न मनाने का चुनाव करता हूँ कि आप यहाँ आए थे! मैं हमेशा आपसे प्रेम करूँगा!"

विषय-सूची

आभार

प्राक्कथन

आमुख

धन मायने रखता है

भूमिका

प्रस्तावना:

विपत्तियों को सफलता में बदलने के रहस्य

1

अपनी मानसिकता बनाएँ... दबाव बनाए रखें, लेकिन दहशत में न आएँ (क्योंकि दबाव से हीरे बनते हैं, जबकि दहशत से तबाही आती है)

2

स्वैच्छिक सामूहिक अफ़सोस में शामिल न हों

3

घमंड को अपनी समृद्धि में ज़हर न घोलने दें

4

कल की शक्ति और संभावनाओं के बारे में सोचना न छोड़ें

5

प्रोएक्टिव बनें

6

सृजनात्मक बनें

7

प्रार्थनापूर्ण बनें

समापन

लेखक के विषय में

आभार

मैं अपनी पत्नी डी टेलर-जॉली को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उसने हमेशा मेरा समर्थन किया और मुझे प्रेरणा दी। मैं अपनी संतानों विलियम और लटोया को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो उन्होंने इस प्रोजेक्ट में अपनी राय दी। मैं अपनी मार्केटिंग मैनेजर शेरिल रैगिन को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को अंतिम रूप देने और प्रकाशन हेतु तैयार करने में मदद की। इस पुस्तक की अवधारणा पर विचार-विमर्श के दौरान सलाह तथा राय के लिए मैं अपने मास्टरमाइंड ग्रुप के सदस्यों बिल केट्स, स्टीवन गैफ़नी, ज़ेमिरा जोन्स और सूज़ी पॉमेरांत्स को धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं अपनी प्रिय मित्र सैम हॉर्न (www.samhorn.com) को धन्यवाद देना चाहता हूँ; जब साहित्यिक विचारों को आकर्षक अवधारणा में बदलने की बात आती है, तो उनका कोई जवाब नहीं है। जब मैं मंदी के दौर में भी दौलत बनाने में लोगों की मदद करने की अवधारणा पर काम शुरू कर रहा था, तो मैं एक आकर्षक शीर्षक की तलाश में संघर्ष कर रहा था। मैं इस तरह के शीर्षकों पर विचार कर रहा था, जैसे "आर्थिक संकटों को विजयों में कैसे बदलें," "लुढ़कती अर्थव्यवस्था में ऊपर कैसे जाएँ," "कैसे मंदी से गुज़रें और अमीर बनें," और मुश्किल आर्थिक दौर में पैसे बनाने संबंधी कुछ और शीर्षक भी थे। उस समय मैंने एक नेटवर्किंग डिनर में हिस्सा लिया, जो सैम ने अपने कुछ मित्रों के लिए आयोजित किया था और मैंने अपने विचार सामने रखे। वे बोलीं, "विली, आपकी पुस्तक *संकट ही सफलता की नींव है* ने एक नया जुमला शुरू कर दिया है, जिसे पूरे संसार के कई लोग अपनी शब्दावली का आम हिस्सा बना चुके हैं। अपनी पुस्तक और आपके पीबीएस विशेष कार्यक्रम *टर्निंग सेटबैक्स इनटु कमबैक्स* के कारण अब आप सफलता गुरु के रूप में मशहूर हो चुके हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि अब आप आर्थिक सफलता के बारे में बात करना चाहते हैं, इसलिए आप संपत्ति पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं! *विपत्तियों को संपत्तियों में बदलने का विचार* बहुत ख़ूब है!" मैंने कहा, "सैम, आपकी बात बिलकुल सही है!" मैं सैम हॉर्न की प्रतिभा और इससे दूसरों को लाभ पहुँचाने की इच्छा के लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ।

प्राक्कथन

मैं ऐसे क़ानून में यक़ीन नहीं करता, जो किसी इंसान को अमीर बनने से रोके; इससे भलाई कम, नुक़सान ज्यादा होगा।

हालाँकि हम पूँजी पर किसी आक्रमण का प्रस्ताव नहीं रख रहे हैं, लेकिन हम चाहते हैं कि सबसे निर्धन व्यक्ति को भी बाक़ी हर एक के साथ अमीर बनने का समान अवसर मिले।

—अब्राहम लिंकन

लिंकन उस बात को समझते थे, जिसे कई लोग नहीं समझते हैं। अमेरिका जैसे सृजनात्मक, पूँजीवादी समाज में कई महत्त्वाकांक्षी और प्रेरित नागरिक अब भी पैसे बचा सकते हैं, फिर निवेश कर सकते हैं, अंततः उद्यमी या पूँजी के मालिक बन सकते हैं और अपनी ख़ुद की दौलत बना सकते हैं।

अमेरिकी सपना जीवित है और स्वस्थ है। आपको अपने सपने को जीने का हक़ है। यही नहीं, यह आपकी ज़िम्मेदारी भी है। जो लोग कहते हैं कि हम एक ऐसे समय में रह रहे हैं, जहाँ कोई अवसर नहीं हैं, वे बस यह नहीं जानते हैं कि कहाँ देखें।

सहायता मिल सकती है और आप इसे इसी वक़्त अपने हाथों में थामे हैं। विली जॉली की सही समय पर आई यह ज्ञानवर्धक पुस्तक आपके सबसे बुरे डरों के बजाय आपकी सर्वश्रेष्ठ आशाओं को प्रेरित करती है। यह आपकी शंकाओं को नहीं, बल्कि आपके आत्मविश्वास को बढ़ाती है। अंत में, यह पुस्तक ध्यान को वहाँ केंद्रित करती है, जहाँ इसे केंद्रित होना चाहिए - आप इस वक़्त क्या कर सकते हैं, ताकि इसमें दी जानकारी और रणनीतियों पर अमल करने से आपका ख़ुद का आर्थिक भविष्य सुनिश्चित हो जाए।

यह सब इतना अच्छा लगता है कि सच नहीं हो सकता! सतत परिवर्तन और बढ़ती आर्थिक अनिश्चितता के इस युग में यह ख़याली पुलाव है कि आप किसी दूसरे का इंतज़ार करें, जो आपको आपकी मनचाही जीवनशैली और सफलता थमा दे। अपनी संरक्षक परी या अलादीन के चिराग का इंतज़ार करना छोड़ दें! शिकार मानसिकता के हर विचार को

छोड़ दें - आप जिन बाधाओं का सामना करते हैं और जो जवाब आप खोजते हैं, वे दूसरों से नहीं मिल सकते। लचीले और आशावादी कामयाब व्यक्ति बनने के लिए जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह आप में है।

आशावाद सकारात्मक सोच के ऐसे मंत्र दोहराने से विकसित नहीं होता कि जीवन कितना बेहतरीन है... जबकि इसका कोई प्रमाण नज़र न आता हो। यह प्रोत्साहक प्रचार नहीं है। शोध दर्शाता है कि आशावाद बाधाओं से उबरने के इतिहास से हासिल होता है। आप जितनी ज़्यादा बाधाओं से उबरते हैं, आपको इस बात का उतना ही ज़्यादा यक़ीन होता है कि आप अगली बाधा से उबर सकते हैं। आशावादी यथार्थवादी होते हैं। वे जानना चाहते हैं कि कौन सी समस्याएँ उनके सामने हैं, क्योंकि उन्हें यक़ीन होता है कि वे उनसे उबर सकते हैं या सफल होने के लिए उनके पास से घूमकर निकल सकते हैं। यह पुस्तक आपको दौलत नहीं देगी; आपको इसे एक बार में एक दिन, एक चयन, एक काम करके कमाना होगा।

जानकारी से समृद्ध यह पुस्तक आपको एक आज़माई हुई राह का नक़्शा देती है। आप आर्थिक योग्यताएँ सीखेंगे, वह योजना और नज़रिये सीखेंगे, जिनकी ज़रूरत आपको अपना सपना साकार करने के लिए होगी। आप सीखेंगे कि निराशावाद के इस युग में आशा को जीवित कैसे रखना है। आप सीखेंगे कि विपत्तियों और बाधाओं को वित्तीय अवसरों में बदलते समय बेबसी और कुंठा की भावनाओं की जगह पर लचीलेपन, उपायकुशलता और लगन की भावनाओं को कैसे रखना है।

जिस एकमात्र व्यक्ति पर आपका ज़रा सा भी नियंत्रण है, वह आप ख़ुद हैं। इसलिए चिंता में समय बर्बाद करने के बजाय इसका निवेश सृजनात्मक कार्ययोजना में करने में व्यस्त हो जाएँ, एक बार में एक-एक दिन। हर सफल उद्यमी आपको बता देगा कि दौलत की यात्रा बंद दरवाज़ों, संकटों, असफलताओं और राह में सफलता हासिल करने की संतुष्टिदायक ख़ुशी से भरी होती है। किसी को भी ऐसा न करने दें कि वह आपको शिकार बनाए। आप एक लचीले कामयाब व्यक्ति हैं, जो अपना सपना जीने का चुनाव कर रहा है। दौलत आपका प्राथमिक लक्ष्य नहीं होना चाहिए; यह तो आपकी प्रतिभाओं को रूपांतरित करने और किसी उद्देश्य से विचारों का नवाचार करने का सह-उत्पाद है, जो ऐसा फ़र्क़ डालता है कि लोग उसके लिए पैसे देने के लिए तैयार रहते हैं। जब आप अपनी प्रतिभाएँ खोज लेते हैं, अपने उद्देश्य को पहचान लेते हैं, अपने प्रयासों को केंद्रित कर लेते हैं और एक सकारात्मक नज़रिये का दावा करते हैं, तो दौलत और सार्थकता क़रीब ही होंगी!

मैंने वक्ता और प्रेरक व्यक्ति के रूप में विली जॉली को सक्रिय देखा है। उनकी सलाह और सहज बोध वाला ज्ञान उतना ही जीवंत है, जितना कि शक्तिदायक है। वे वहाँ रहे हैं, जहाँ आप हैं और उन्होंने एक के बाद दूसरी सफलता की ओर अपनी ख़ुद की यात्रा की है। अब वे राह में सीखे सबक़ आपको भी सिखाने को तैयार हैं।

विली जॉली केवल जानकारी व ऊर्जा ही नहीं देते हैं; वे ऐसे तरीक़ों से संप्रेषण करते हैं, जिन्हें लोग समझ और सराह सकें। उनकी पुस्तक कुछ बातें रेखांकित करती है, जिनका इस्तेमाल करने को मैं बेताब हूँ:

- बुरे दौर आए हैं और गुज़र जाएँगे; वे रुकने के लिए नहीं... बल्कि गुज़रने के लिए आए हैं!
- पराजित मानसिकता दूसरों के लिए छोड़ दें - अगर 10 प्रतिशत लोग बेरोज़गार हैं, तो 90 प्रतिशत लोग काम कर रहे हैं। पराजितों के बजाय विजेताओं में से एक बनें।
- वह न करें जो आरामदेह है - वह करें जो आवश्यक है।
- प्रोएक्टिव बनें - उठें और काम में जुट जाएँ!
- सफलता आपके पास नहीं आएगी - लोगों के सामने अपने व्यवसाय, अपने प्रॉडक्ट्स और अपनी सेवाओं का प्रचार तथा मार्केटिंग करें।
- प्रार्थना करने के बाद अपने पैर हिलाएँ, ताकि ईश्वर के पास कुछ काम करने के लिए रहे!

अपने सपने सच करने के लिए बस इसकी ज़रूरत होती है कि आप ख़ुद के लिए उनका दावा करें। कोई बेहतर चीज़ करें, जिसकी लागत कम हो। इसे बेहतर या ज़्यादा तेज़ करें। नवाचार करें और एक क़दम बढ़ाएँ। अगर शुरुआती प्रयास असफल हो जाएँ, तो उठें और नए विकल्प चुनें... और सफल हों। आप कैसे शुरू करें? अगर आपको पक्का पता नहीं है कि पहले क्या करना है, तो सबसे पहले उठें और एक बहुत ही आसान चीज़ से शुरुआत करें... इस पुस्तक को पढ़ें! वैसे जब आप अंततः सफल हो जाएँ, तो विली को लिखकर बता दें कि आपके सपने को साकार करने में आपके लिए क्या कारगर रहा। वे आपकी कहानी का इस्तेमाल अपने प्रेरक मिनट संदेश में कर सकते हैं। आप उनकी अगली पुस्तक में अपने बारे में भी पढ़ सकते हैं।

तो विली जॉली की यह पुस्तक पढ़ डालें और एक बार में एक-एक दिन करके अपनी चिंताओं को लाभकारी अवसरों में बदलने में जुट जाएँ। इसे सिर्फ़ एक बार ही न पढ़ें; इसके उन हिस्सों को बार-बार पढ़ें, जो आपको अपने लिए उपयुक्त लगते हैं और सीखी गई बातें दूसरों को भी बताएँ। अंत में, इस ज्ञान को कर्म में बदलकर अपनी ज़िंदगी बदलें और लेखक को सबसे बड़ी प्रशस्ति दें! याद रखें, आपके आर्थिक स्वप्नों को साकार करना आपका अवसर भी है और ज़िम्मेदारी भी।

—टेरी पॉलसन, पीएच.डी, पेशेवर वक्ता, राष्ट्रीय स्तंभकार और *द ऑप्टिमिज़्म एडवांटेज: 50 सिम्पल ट्रुथ्स टु ट्रांसफ़ॉर्म युअर एटीट्यूड्स ऐंड एक्शन्स इनटु रिज़ल्ट्स* के लेखक हैं।

आमुख

2008 की वैश्विक मंदी के बीच एक दिन मैं टेलीविज़न देख रहा था। मैंने एक युवक की ख़बर देखी, जिसकी नौकरी चली गई थी और पैसा ख़त्म हो गया था। उसने अपना सब कुछ गँवा दिया था और उसने अपने जीवन का अंत करने का दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय ले लिया। उसने एक अस्थायी समस्या की वजह से एक स्थायी निर्णय ले लिया। उसने एक अस्थायी समस्या की वजह से अपनी जान ले ली और यह एक ऐसा निर्णय था, जिसे बदला नहीं जा सकता था। मैं चीख़ा और टेलीविजन की तरफ़ देखकर चिल्लाया, "नहीं! दूसरे विकल्प हैं!"

उस ख़बर के अगले कुछ दिनों में मैंने कई और कहानियाँ सुनीं कि लोग अपने भविष्य के बारे में बुरे निर्णय ले रहे हैं और यह सब पैसे की तंगी की वजह से हो रहा है। मुझे अहसास हुआ कि मुझे कुछ करना चाहिए और तुरंत करना चाहिए, ताकि लोग अपने आर्थिक संकटों को अलग दृष्टिकोण से, एक सकारात्मक दृष्टिकोण से देखें! मैं जानता था कि मुझे लोगों को कुछ आशा देनी चाहिए, ऐसे दौर में भी, जो उन्हें नाउम्मीद लग रहा था। मैं जानता था कि मेरे पास कुछ जानकारी थी, जो न सिर्फ़ आशा पाने में उनकी मदद कर सकती थी, बल्कि उनकी वित्तीय निराशा के समाधान खोजने में भी उनकी मदद कर सकती थी।

मैंने तुरंत प्रकाशन उद्योग के अपने कुछ मित्रों से संपर्क किया और उनसे पूछा कि क्या वे एक नई पुस्तक के लिए अपनी प्रकाशन तिथियाँ बदलने को तैयार हैं। मुझे सुखद आश्चर्य हुआ, जब मुझे तुरंत "हाँ" सुनने को मिला। मैं तुरंत पांडुलिपि पूरी करने में जुट गया और इसे रिकॉर्डतोड़ समय में उन तक पहुँचा दिया। उस बातचीत के छह महीनों के भीतर पुस्तक प्रकाशित हो चुकी थी, बुकस्टोर्स में पहुँच चुकी थी और धड़ाधड़ बिकने लगी थी। यह जल्दी ही कई बेस्टसेलर सूचियों में शामिल हो गई।

जब मंदी थमी और अर्थव्यवस्था सामान्य होने लगी, तो मैंने देखा कि आर्थिक स्थितियों के बारे में डाक में आने वाले पत्रों और ई-मेल्स की संख्या में कोई कमी नहीं आई। लोग अब भी ईमेल करके पूछ रहे थे कि वे अपनी आर्थिक स्थिति बेहतर कैसे बनाएँ। लोगों के पास अब भी पैसे संबंधी समस्याएँ थीं, आर्थिक संकट थे और उन्हें मदद की ज़रूरत थी। मैंने

सीखा कि हालाँकि वैश्विक अर्थव्यवस्था बेहतर हो गई थी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि इससे लोगों की निजी आर्थिक स्थिति बेहतर हो गई थी। इसलिए मैंने इस पुस्तक का एक अद्यतन, पुनरीक्षित संस्करण बनाने का निर्णय लिया, ताकि आर्थिक विपत्तियों से जूझने वाले लोगों को मदद मिल सके, चाहे वे किसी भी कारण से उस विपत्ति में फँसे हों। यह पुनरीक्षित संस्करण इसलिए तैयार किया गया है, ताकि आप अपनी आर्थिक विपत्तियों को भारी आर्थिक संपत्तियों में बदल सकें! वास्तव में यह पुस्तक ख़ास तौर पर इसीलिए तैयार की गई है, ताकि आप अपनी आर्थिक विपत्तियों को संपत्तियों में बदल लें!

धन मायने रखता है

अगर आपके पास आर्थिक चुनौतियाँ रही हैं - आपकी नौकरी चली गई है, आपका घर या बचत चली गई है - और इस वजह से आपको लगता है कि आप अपना मानसिक संतुलन खोने वाले हैं, तो यह पुस्तक आपकी मदद कर सकती है! दूसरी ओर, अगर आपके सामने अब तक कोई आर्थिक चुनौती नहीं आई है, तब भी मैं आपको निश्चित रूप से यह पुस्तक पढ़ने की सलाह देता हूँ, क्योंकि अगर आप पर्याप्त लंबा जिएँगे, तो आपके जीवन में अंततः कुछ आर्थिक विपत्तियाँ अवश्य आएँगी।

मैं बताना चाहता हूँ कि यह पुस्तक पैसे के बारे में है! पैसा हमारी दैनिक गतिविधियों में एक बड़ी भूमिका निभाता है - हम क्या खाते हैं, हम कहाँ सोते हैं और हमारे जीवन में आराम का स्तर क्या है आदि। पैसा महत्त्वपूर्ण है। कुछ लोग कहते हैं कि पैसा ही संसार को इसकी धुरी पर चलाता है। मैं सहमत हूँ कि पैसा पूरे संसार में चीज़ें कराता है और पैसा मायने रखता है! चूँकि पैसा मायने रखता है, इसलिए हम इसके बारे में बात कर सकते हैं और पैसे के बारे में एक स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने में लोगों की मदद कर सकते हैं। हम लोगों को बता सकते हैं कि वे अपनी समृद्धि कैसे बढ़ाएँ, मुश्किल आर्थिक दौर में भी। हमें दौलत के बारे में बात करने की ज़रूरत है। हमें इस बारे में बात करने की ज़रूरत है कि अपनी विपत्तियों को संपत्तियों में बदलना क्यों महत्त्वपूर्ण है!

भूमिका

"पैसा, पैसा, पैसा, पैसा... पैसा!" ये शब्द ओ'जेज़ के *फ़ॉर द लव ऑफ़ मनी* हिट गीत से लिए गए हैं। यह गीत 1970 के दशक में भारी लोकप्रिय हुआ था और आज भी लोकप्रिय है। वास्तव में यह गीत मशहूर शो *द अप्रेंटिस* की शुरुआती धुन के रूप में चुना गया, जिसमें प्रतिस्पर्धी डोनाल्ड ट्रम्प के साथ बहुत सा पैसा बनाने की उम्मीद में आपस में प्रतिस्पर्धा करते थे। आइए सच का सामना करते हैं, पैसा लोकप्रिय संगीत और मास मीडिया का लोकप्रिय विषय है और धन संबंधी बहुत से शो हैं, जैसे *फ़ास्ट मनी, मैड मनी, हू वान्ट्स टु बी अ मिलियनेअर और हू वान्ट्स टु मैरी अ मिलियनेअर?* पैसे के बारे में - इसे बनाने, इसे बचाने, इसका निवेश करने आदि-इत्यादि - के बारे में पूरी तरह समर्पित पत्रिकाएँ और अख़बार हैं। पैसा हमारी वैश्विक संस्कृति का काफ़ी बड़ा हिस्सा है।

लेकिन हम सभी ने यह कहावत सुनी है, "पैसा सब कुछ नहीं है!" इस बारे में मैं कहना चाहता हूँ कि मैं सहमत हूँ, पैसा सब कुछ नहीं है, *लेकिन* ... पैसा यक़ीनन एक अहम चीज़ है - एक बहुत ही अहम चीज़! जब समय मुश्किल होता है, तो हमारे जीवन के आवश्यक हिस्से के रूप में पैसे की भूमिका और ज़्यादा स्पष्ट हो जाती है। पैसा महत्त्वपूर्ण है, इसलिए हमें इसके बारे में बात करनी चाहिए और हमें पैसा उत्पन्न करने तथा इसके प्रबंधन की योग्यताएँ निखारनी चाहिए।

क्या पैसे के बारे में बात करना वाक़ई ज़रूरी है?

इतने वर्षों में कभी-कभार कोई न कोई व्यक्ति भाषण के बाद मेरे पास आया है और उसने मुझसे पूछा है कि मैं पैसे के बारे में बात क्यों करता हूँ। वे कहते हैं कि जीवन सिर्फ़ पैसे तक ही सीमित नहीं है। मेरा जवाब हमेशा वही रहता है: मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ! जीवन पैसे से बढ़कर है।

मैंने यह बात अपनी पहले की पुस्तकों में भी कही है और मैं इसे यहाँ एक बार फिर कहना चाहूँगा: पैसा प्रेरणा देने वाला प्रबल साधन है, यह एक शक्तिशाली प्रेरक है! पैसा लोगों को ज़्यादा जल्दी उठने और ज़्यादा देर तक रुके रहने के लिए प्रेरित करता है। पैसा लोगों को वहाँ जाने के लिए प्रेरित करता है, जहाँ वे नहीं जाना चाहते और ऐसी चीज़ें करने

के लिए प्रेरित करता है, जिन्हें वे नहीं करना चाहते। पैसा लोगों से ऐसे काम कराता है, जिनसे वे नफ़रत करते हैं, लेकिन यह उन्हें बार-बार जुटे रहने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन यह ध्यान रखें कि पैसा सबसे शक्तिशाली प्रेरक नहीं है! मैं मानता हूँ कि पैसा एक शक्तिशाली प्रेरक है, लेकिन प्रेम उससे कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है। मैं आपसे कहता हूँ कि आप रुकें और नीचे दिए परिदृश्य में मेरे साथ गुज़रें।

मान लें, कोई आकर आपसे कहता है कि आप 100 फ़ुट लंबे और 2 फ़ुट चौड़े पटिये पर चलें, तो इसके बदले में वह आपको 1,000 डॉलर देगा। पटिया ज़मीन पर रखा है और आपको तो बस उस पर एक छोर से दूसरे छोर तक चलना है। क्या आप 1,000 डॉलर के लिए उस पटिये पर चलेंगे? उम्मीद है कि आपका जवाब "हाँ" होगा, क्योंकि यह आसानी से मिल रहे 1,000 डॉलर हैं। अब मान लें कि वही व्यक्ति उसी पटिये को 100 मंज़िला अट्टालिका की छत पर ले जाता है। (मुझे 1,000 डॉलर के नोट पर एक ईंट रख देनी चाहिए, ताकि यह इतनी ऊँचाई पर चलने वाली हवा से उड़ न जाए)। क्या आप अब भी 1,000 डॉलर के लिए ज़मीन से 100 मंज़िल ऊपर पटिये के एक छोर से दूसरे छोर तक चलेंगे? मैं जिन लोगों से पूछता हूँ, उनमें से ज़्यादातर का जवाब होता है, "नहीं!"

अब ठहरें और पल भर के लिए किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें, जिससे आप प्रेम करते हों, शायद माता-पिता या संतान या भाई-बहन या आपका सबसे अच्छा मित्र। अब कल्पना करें कि जो व्यक्ति आपको पटिये पर चलाना चाहता है, वह सौवीं मंज़िल पर आपके प्रिय व्यक्ति को अट्टालिकाओं के बीच रखे पटिये के दूसरे छोर पर थामे हुए है। वह आपसे कहता है कि अगर आप पटिये पर नहीं चलेंगे, तो वह आपके प्रिय व्यक्ति को इमारत से नीचे फेंक देगा। क्या अब आप उस पटिये पर चलना चाहेंगे? मैं जिन लोगों से पूछता हूँ, उनमें से ज़्यादातर कहते हैं, "हाँ, बिना किसी शक के, हाँ!" देखिए, लोग पैसे की ख़ातिर जितना करेंगे, प्रेम की ख़ातिर उससे ज़्यादा करेंगे। पैसा महत्त्वपूर्ण है, लेकिन यह सब कुछ नहीं है।

जीवन परिवार और मित्रों और धर्म के बारे में है, लेकिन जब हमारे पास पैसा कम होता है, तो हमारे दिमाग़ पर चिंता और तनाव का बोझ आ जाता है। ज़्यादातर लोगों के लिए पैसा महत्त्वपूर्ण तो होता है, लेकिन हम सामान्यतः इस पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं। लेकिन जब हम तंगी की हालत में पहुँच जाते हैं, तो यह इतनी बड़ी चीज़ और इतना बड़ा मुद्दा बन जाता है कि यह हमारी सोच को चिंता से भर देता है।

मैंने ग़ौर किया है कि जो लोग आम तौर पर कहते हैं कि पैसा महत्त्वपूर्ण नहीं है, उनके पास या तो पैसा होता है या फिर कम से कम वे इतना जानते हैं कि उनके अगले भोजन की व्यवस्था कहाँ से होने वाली है और उन्हें अपना घर गँवाने का कोई डर नहीं होता। लेकिन अगर आपके पास भोजन के लिए पैसे नहीं हैं और आप डर रहे हैं कि आप कहाँ सोएँगे, तब पैसा बहुत बड़ा मुद्दा बन जाता है। जो लोग पैसे की सचमुच परवाह नहीं करते हैं, उन्होंने या तो ग़रीबी की क़सम खा रखी है या फिर उनका धर्मशास्त्र कहता है कि ग़रीबी में ही धर्मनिष्ठा है। बहरहाल, मुझे ऐसी प्रतिक्रिया इक्का-दुक्का लोगों से ही मिलती है। अपने व्याख्यान के

बाद मैं जिन लोगों से बात करता हूँ, उनमें से लगभग 98 प्रतिशत अपनी आमदनी बढ़ाने के तरीक़े खोज रहे हैं, ताकि उनके परिवार का जीवन बेहतर हो जाए या फिर वे ज़्यादा आमदनी कमाने के विचारों की तलाश इसलिए कर रहे हैं, ताकि वे ज़्यादा दान दे सकें।

मैं सीधे-सीधे कहना चाहता हूँ कि इस पुस्तक में मैं पैसे के बारे में बात करूँगा और यह भी कि आप ज़्यादा पैसे कैसे कमा सकते हैं, मुश्किल आर्थिक समय में भी। मैं इस सत्य के बारे में बात करना चाहता हूँ कि पैसा हमारे समाज का एक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक हिस्सा है। कुछ लोग सोचते हैं कि पैसा महत्त्वपूर्ण नहीं है और सार्वजनिक रूप से इसके बारे में बातचीत करना अच्छा नहीं है। बाक़ी सोचते हैं कि पैसा बुरा है और "सारी बुराई की जड़" है; लेकिन *बाइबल* में दरअसल यह कहा गया है, "पैसे का प्रेम ही सारी बुराई की जड़ है।" यह तब होता है, जब आप पैसे को अपना भगवान बना लेते हैं और यह एक भयंकर मालिक साबित होता है। पैसा होना आम तौर पर समस्या नहीं है; समस्या तो तब होती है, जब पैसा आपको अपनी गिरफ़्त में ले लेता है!

अगर पैसे का प्रेम सारी बुराई की जड़ है, तो पैसे की कमी वह वजह है, जिससे बुराई का यह वृक्ष उगता और अंकुरित होता है। मुश्किल आर्थिक दौर में हम दरअसल यह देख सकते हैं कि पैसा - और इसका अभाव - कैसे लोगों में भारी चिंता और डर उत्पन्न कर सकता है और उनसे भयानक चीज़ें करा सकता है। जब पैसे की तंगी हो जाती है, तो यह आपके जीवन और जीवनशैली के हर हिस्से को स्पर्श करती है। इसके अलावा जब किसी समुदाय में पैसे की तंगी हो जाती है, तो इसका प्रभाव समुदाय और संस्कृति के हर हिस्से पर पड़ता है। लोग अपने मनोरंजन पर कम ख़र्च करते हैं, अपने चर्च में कम दान देते हैं आदि। कोई भी आर्थिक संकट के डंक से अछूता नहीं रहता। जब लोगों के पास पैसा नहीं होता या वे अपने पास के पैसे को ख़र्च करने से डरने लगते हैं, तो इससे अर्थव्यवस्थाएँ और राष्ट्र घुटने टेक सकते हैं। मुश्किल समय में खालें उतर जाती हैं और वे भेड़िये उजागर हो जाते हैं, जो अच्छे समय के दौरान भेड़ के वेश में छिपे रहते हैं। बर्नी मैडॉफ़ भेड़ के वेश में छिपे भेड़िये का आदर्श उदाहरण है। वह उन हज़ारों मेहनती लोगों की जीवन भर की बचत के साथ "चंपत" हो गया, जिन्होंने उसके भरोसे अपने पास की हर चीज़ का निवेश कर दिया था। जैसा अब हम सब जानते हैं, मैडॉफ़ इतिहास की सबसे बड़ी पॉन्ज़ी यानी धोखाधड़ी की योजना चला रहा था।

मुश्किल दौर में लोग डर जाते हैं और पैसा ख़र्च करना छोड़ देते हैं। जब लोग घर और कार जैसी चीज़ों पर पैसे ख़र्च करना बंद कर देते हैं, तो इसका मकान व कार बनाने तथा बेचने वाले कर्मचारियों पर बुरा असर होता है। फलस्वरूप इन लोगों के पास ज़रूरत के नियमित सामान पर ख़र्च करने के लिए कम पैसा रहता है। यह चक्र चलता जाता है और अंततः हर व्यक्ति को प्रभावित कर देता है। पैसे की कमी समाज पर बहुत बुरा असर डाल सकती है। पैसा सब कुछ नहीं है, लेकिन यह जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। जैसा रीटा डेवनपोर्ट कहती हैं, "पैसा हर चीज़ नहीं है... लेकिन यह साँस लेने के बहुत क़रीब है!"

कई बार मुश्किल आर्थिक दौर का विश्व की अर्थव्यवस्था से कोई संबंध नहीं होता, बल्कि आपकी व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था से होता है। दूसरे शब्दों में, ऐसे दौर आ सकते हैं जब अर्थव्यवस्था तो स्वस्थ होती है, लेकिन आप रास्ते में किसी बाधा से टकरा जाते हैं और आपको व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने की ज़रूरत होती है। आपके पास ढेर सारा पैसा हो या आप पैसे की कमी का अनुभव कर रहे हों, ये स्थितियाँ आपके तनाव, स्वास्थ्य और परोपकार के स्तर में एक बड़ी भूमिका निभा सकती हैं।

दौलतमंद बनना क्यों महत्त्वपूर्ण है?

धन ख़ुशी नहीं ख़रीद सकता, लेकिन निर्धनता भी नहीं ख़रीद सकती।

—लियो रॉस्टन

व्यक्तिगत दौलत बनाना क्यों महत्त्वपूर्ण है? क्योंकि दिल ही दिल में ज़्यादातर लोग यही सोचते रहते हैं कि वे ज़्यादा पैसे कैसे बना सकते हैं, लेकिन सिर्फ़ चंद लोग ही जानते हैं कि क्यों। इससे भी कम लोग दौलत हासिल करने में जुटने के लिए इस प्रश्न से परे जाते हैं। अगर यह सवाल पूछा जाए, "करोड़पति कौन बनना चाहता है?", तो ज़्यादातर लोग कहेंगे, "मैं!" सकारात्मक जवाब देने वाले लोग दरअसल करोड़पति बनना तो चाहते हैं, लेकिन बहुत कम ही दरअसल ऐसा कर पाते हैं, क्योंकि उनके मन में दौलत का संबंध आलीशान जीवन और फिजूलख़र्ची से है, व्यावहारिक दिन-प्रति-दिन के जीवन से नहीं है। इसके विपरीत, मैं कहता हूँ कि दौलत का संबंध फिजूलख़र्ची से और विलासिता की गोद में रहने से नहीं है, बल्कि इसका संबंध तो ऐसा जीवन जीने से है, जो आपको और आपके प्रियजनों को स्वास्थ्य तथा दीर्घायु के सर्वश्रेष्ठ अवसर प्रदान करे। ज़्यादातर लोग दौलतमंद बनना चाहते हैं, लेकिन बहुत कम ने यह निर्णय लिया है कि दौलतमंद बनना *महत्त्वपूर्ण* है। मैं कहता हूँ कि दौलतमंद बनना महत्त्वपूर्ण है! क्यों? क्योंकि पैसा आपको विकल्प देता है।

पैसा जीवन के कई अहम पहलुओं में विकल्प देता है, जिनमें आवास, चिकित्सा सुविधा और शिक्षा शामिल हैं। जब मैं व्याख्यान देने के लिए पूरे संसार की यात्रा करता हूँ, तो मुझे अक्सर ऐसे लोग मिलते हैं, जो कहते हैं कि वे ज़्यादा पैसे चाहते हैं, लेकिन उन्होंने अभी तक अतिरिक्त आमदनी कमाने के लिए आवश्यक क़दम उठाने का निर्णय नहीं लिया है। ये लोग यह नहीं समझते हैं कि पैसा दीर्घायु बनाता है, क्योंकि पैसे की कमी का आपकी मानसिक शांति और आपके तनाव के स्तर पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आँकड़े दर्शाते हैं कि रोकथाम की स्वास्थ्य योजनाओं, व्यायाम योजनाओं और पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव के कारण ग़रीबों का जीवनकाल कम होता है।

कुछ साल पहले मैंने एक छोटे लड़के के बारे में एक कहानी सुनी, जिसके पैर पर अजीब सी सूजन आ गई थी। उसकी माँ उसे डॉक्टर के पास ले गई। डॉक्टर ने जाँच करने

के बाद कहा कि लड़के को एक दुर्लभ बीमारी हो गई थी। डॉक्टर की सलाह थी कि लड़के का पैर घुटने पर से काट देना चाहिए।

यह सुनकर माँ के होश उड़ गए। उसने डॉक्टर को बताया कि वह लड़का बहुत कुशल फ़ुटबॉल खिलाड़ी है। वह सोचने लगी कि क्या दूसरे विकल्प उपलब्ध हैं। जब डॉक्टर ने जवाब दिया कि पैर काटना ही बीमारी से निबटने का सबसे प्रभावी तरीक़ा है, तो माँ ने पूछा कि क्या वह किसी दूसरे डॉक्टर से परामर्श ले सकती है। उसे हॉल के पार दूसरे डॉक्टर के पास भेज दिया गया।

दूसरे डॉक्टर ने चार्ट देखा और उसका निष्कर्ष भी यही था कि घुटने पर से पैर काटना ही स्थिति को सँभालने का सबसे प्रभावी तरीक़ा था। माँ ने एक बार फिर ऐलान किया कि वह लड़का होनहार खिलाड़ी था और उसे दौड़ना तथा खेल खेलना बहुत पसंद था। माँ ने आशा जताई कि शायद पैर काटने के अलावा दूसरे विकल्प भी होंगे। डॉक्टर ने कंधे उचकाकर कहा, "माफ़ करें, लेकिन यही स्थिति से निबटने का सबसे प्रभावी तरीक़ा है।"

फिर माँ ने शोध शुरू किया। उसे पता चला कि यह बीमारी गंभीर तो थी, लेकिन जानलेवा नहीं थी। उसे यह भी पता चला कि पैर काटना ही एकमात्र विकल्प नहीं था। वह इस बारे में एक और डॉक्टर से राय लेना चाहती थी, लेकिन उसे बताया गया कि उसकी चिकित्सा योजना में एक बीमारी के लिए सिर्फ़ दो डॉक्टरों को दिखाने का प्रावधान था। माँ ने फ़ोन वाली महिला से कहा, "मैं आपकी स्पष्टवादिता की सराहना करती हूँ, लेकिन मेरे पास बैंक में थोड़ा पैसा है, इसलिए मैं अपने दम पर दूसरे विकल्पों की जाँच करूँगी।"

माँ ने इंटरनेट पर तलाश की और उसे बाल्टीमोर, मैरीलैंड में एक विशेषज्ञ मिल गया। उसने विशेषज्ञ के ऑफ़िस से संपर्क करके एक अपॉइंटमेंट ले लिया। उस महिला की चिकित्सा योजना में यह विशेषज्ञ शामिल नहीं था, इसलिए महिला को उसकी फ़ीस अपनी जेब से देनी पड़ी। उसने ख़ुद को याद दिलाया, "मेरे पास थोड़ा पैसा है, इसलिए मैं इस अपॉइंटमेंट के लिए पैसे दूँगी।" वह और उसका बेटा बाल्टीमोर जाने वाले विमान में बैठ गए और विशेषज्ञ ने छोटे लड़के की काफ़ी समय तक जाँच की। अपनी जाँच पूरी करने के बाद उन्होंने आख़िरकार कहा, "मुझे यक़ीन है आपको यह बताया गया होगा कि पैर काटना इस समस्या से निबटने का सबसे अच्छा तरीक़ा है, लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूँ। यह समस्या से निबटने का सबसे प्रभावी या सबसे सस्ता तरीक़ा ज़रूर है, लेकिन यह समस्या से निबटने का एकमात्र या सबसे अच्छा तरीक़ा नहीं है।" उन्होंने आगे कहा, "मैं आपके बेटे का पैर बचा सकता हूँ। यह सस्ता नहीं होगा, लेकिन मैं उसका पैर बचा सकता हूँ।" डॉक्टर ने बाद में उपचार करके उस छोटे लड़के का पैर बचा लिया। यह इस बात का उदाहरण है कि हालाँकि पैसा *सब कुछ* नहीं होता, लेकिन यह आपको विकल्प देता है।

इससे एक थोड़ा रोचक प्रश्न उठता है: हम पैसे की कमी की चिंताओं से कैसे निबट सकते हैं? जवाब इस पुस्तक में आगे दिया गया है... केवल मुश्किल आर्थिक स्थितियों से बचना ही काफ़ी नहीं है; समृद्ध बनें। यह सही है, *समृद्ध बनें!* मैं आपको एक ऐसी यात्रा पर

ले जाऊँगा, जो यह उजागर कर देगी कि आर्थिक और मानसिक दोनों दृष्टियों से आर्थिक मंदियों से कैसे निबटें। इसमें यह भी बताया जाएगा कि आप जिन आर्थिक स्थितियों का सामना कर रहे हैं, उनमें अपने वित्तीय डरों से उबरने और जीतने के लिए आपको किन चीज़ों की ज़रूरत होगी। इससे दौलत के बारे में विजेता का नज़रिया बनाने में मदद मिलेगी।

मैंने पैसे और इसके बारे में हमारे नज़रिये का ज़िक्र इसलिए किया, क्योंकि हमारे नज़रिये का इस बात पर बड़ा प्रभाव पड़ता है कि हम पैसे से कैसे पेश आते हैं, ख़ास तौर पर मुश्किल समय में। मुश्किल आर्थिक दौर की निराशा और हताशा से खिन्न होने तथा पूरी तरह पराजित होने के लिए लोगों को आर्थिक मंदी की ज़रूरत भी नहीं होती। बहरहाल, हम आर्थिक विपत्ति को एक लाभ में बदल सकते हैं और ख़ुद को भारी सफलता तथा दौलत की स्थिति में ला सकते हैं। अब समय आ गया है कि आप भी दौलतमंद बन जाएँ!

व्यापारिक मंदी, आर्थिक मंदी, आर्थिक गिरावट या तंगी और पैसे कम महीने के दिन ज़्यादा होना, इस सबका एक ही मतलब होता है: हमें पैसे की ज़रूरत है! पैसा महत्त्वपूर्ण है और ज़्यादातर लोगों को सिर्फ़ पैसे की ही ज़रूरत नहीं है, उन्हें बहुत ज़्यादा पैसों की ज़रूरत है - ख़ास तौर पर अगर उनके बच्चे हैं। तो आपको बहुत से पैसों की ज़रूरत है!

मेरे जीवन में एक ऐसा समय था, जब मैंने कहा था, “पैसा महत्त्वपूर्ण नहीं है, सचमुच महत्त्वपूर्ण तो मित्रों और परिवार वालों का प्रेम है!” मैंने इतने बरसों में सीखा है कि मैं तब आधा सही था। अंततः मित्रों और परिवार वालों का प्रेम सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। हम सभी जानते हैं कि जब हमारे आख़िरी दिनों की बात आती है, तो हम अपने पास के पैसों के बारे में नहीं सोचेंगे, बल्कि मित्रों और परिवार वालों के प्रेम के बारे में सोचेंगे। लेकिन पैसों के बिना आख़िरी दिन हमारे अनुमान से बहुत जल्दी आ सकता है। पैसे होने से लंबे जीवन की गारंटी नहीं मिल जाती है, लेकिन आँकड़े साफ़ दर्शाते हैं कि संपन्न लोग निर्धन लोगों से ज़्यादा लंबा जीते हैं।

अपनी पहले की पुस्तकों में मैंने मित्रों और परिवार वालों के महत्त्व पर बात की है और यह बताया है कि आपको उन संबंधों को कैसे पोषण देना चाहिए, क्योंकि दरअसल वे ही आपके जीवन के सबसे अहम हिस्से होने वाले हैं। मैं अब भी यक़ीन करता हूँ कि यह सच है, लेकिन अगर पैसा आपकी महत्त्वपूर्ण चीज़ों की सूची में नहीं है, तो आप संबंधों के धागे पर तनाव डाल देंगे। जब मुश्किल दौर वार करता है और आपके बच्चे होते हैं और भुगतान के लिए बिल होते हैं, तो आपको अहसास हो जाता है कि पैसा बहुत महत्त्वपूर्ण है। मैंने पाया है कि अर्थव्यवस्था जितनी तंग होती है, पैसा उतना ही ज़्यादा केंद्र में आता है, इसलिए आइए यह सीखते हैं कि मुश्किल दौर से कैसे गुज़रें और दौलत की राह पर कैसे पहुँचें।

जैसा पहले बताया जा चुका है, पैसे का विषय हमारी पूरी संस्कृति में रचा-बसा है; हम इससे बच नहीं सकते। पैसा हर जगह है। यह हमारे साहित्य में है, हमारी पत्रिकाओं में है। जैसा मैंने पहले कहा था, एक पत्रिका का नाम ही *मनी मैग्ज़ीन* है। *द वॉल स्ट्रीट जर्नल* जैसे

कई अख़बार हैं, जो पैसे और आर्थिक ख़बरों पर केंद्रित होते हैं। मेरी प्रिय पुस्तक बाइबल भी, जो सारे समय की बेस्टसेलिंग पुस्तक है, पैसे का उल्लेख 2,300 से ज़्यादा बार करती है। एक्लेज़ियास्ट्स 10:19 के पीटरसन के अनुवाद में लिखा है, "हँसी और रोटी एक साथ चलती हैं और सुरा जीवन को चमक देती है। लेकिन यह पैसा है, जो संसार को इसकी धुरी पर चलाता है!" क्राउन फ़ाइनैंशियल मिनिस्ट्रीज़ के सीईओ हॉवर्ड डेटन के अनुसार ईसा मसीह की 15 प्रतिशत बातें पैसे के बारे में हैं।

बाइबल में ड्यूटरोनॉमी 8:18 में कहा गया है, "और तुम मालिक अपने ईश्वर को याद रखोगे, क्योंकि वही है जो तुम्हें दौलत पाने की शक्ति देता है, ताकि वह अपना वचन पूरा कर सके, जो उसने तुम्हारे पुरखों को दिया था, क्योंकि यह वही दिन है!" इसका मतलब है कि ईश्वर हमें दौलत कमाने की शक्ति और योग्यता देता है, लेकिन दौलत उसके वचन को पूरा करने के लिए यानी दूसरों की मदद करने के लिए होनी चाहिए। मुझे यक़ीन है कि ईश्वर चाहता है कि उसके बच्चे दौलतमंद बनें और वह दौलतमंद बनने में आपकी मदद करेगा, बशर्ते आप में उस दौलत के अच्छे रखवाले बनने की इच्छा हो और आप अपनी दौलत का समझदारी से इस्तेमाल करने की आदत दिखाएँ।

मेरा लक्ष्य दौलत बनाने और पैसे पाने में आपकी मदद करना है। मैं चाहता हूँ कि आप न सिर्फ़ वित्तीय दौलत हासिल करें, बल्कि अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक संबंधों में सफलता भी हासिल करें। मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ, ताकि आप अपनी आर्थिक विपत्तियों को रोमांचक सफलताओं में बदल लें - दरअसल अपनी विपत्तियों को संपत्तियों में बदल लें!

इस पुस्तक की मुख्य सामग्री में जाने से पहले मुझे यह ज़रूरी लगता है कि मैं अपने बारे में थोड़ा बता दूँ। मैं एक प्रेरक वक्ता, गायक, रेडियो और टेलीविज़न होस्ट तथा लेखक हूँ। मुझे ऐसी पुस्तकें लिखने और कार्यक्रम बनाने का सौभाग्य मिला है, जो पूरे संसार में बहुत बढ़िया चल रहे हैं। पिछली चौथाई सदी में मैंने इसे मेरा व्यवसाय बना लिया है कि मैं सफलता के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा सीखूँ और यह ज्ञान करोड़ों लोगों तक पहुँचाऊँ - भाषणों, पुस्तकों, रेडियो, टेलीविज़न, कॉलम, संगीत, इंटरनेट, ई-मेल और अन्य मंचों के ज़रिये - यहाँ तक कि दैनिक विली जॉली वेक-अप कॉल के माध्यम से भी। मुझे सैकड़ों करोड़पतियों और अरबपतियों के साथ मित्रता करने का अवसर मिला है और मैंने उनसे जीवन तथा सफलता के कमाल के सबक़ सीखे हैं। मैं चाहता हूँ कि आप यह भी जान लें कि हालाँकि यह पुस्तक पैसों और अमीर बनने के बारे में है, लेकिन इस सामग्री का महत्त्व गौण है। इस पुस्तक में मैं जो बुनियादी बात बताऊँगा, वह यह है कि आप व्यक्तिगत रूप से कैसे विकास करें, ताकि यह विकास वित्तीय सफलता और स्थायित्व में प्रकट हो।

मैं ज़ोर देकर कहना चाहता हूँ कि मैं कृतज्ञ हूँ कि मैं एक ऐसे समय में रह रहा हूँ, जिसमें मैं धर्म, परिवार और पैसे के बारे में अपने विचार खुलकर बता सकता हूँ। मैं ज़ोर देकर कहता हूँ कि मैं ईश्वर-समर्थक, परिवार-समर्थक और पूँजीवाद-समर्थक हूँ! मैं ईश्वर को जीवन और उनके दिए भारी वरदानों के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं जिन चीज़ों के लिए कृतज्ञ

हूँ, उनमें मेरे धर्म के अलावा परिवार मेरे लिए सबसे अहम है। जब हम जीवन में अपनी बहुत सी ज़िम्मेदारियों से जूझते हैं, तो हमें परिवार की गेंद पर अतिरिक्त विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि यह काँच की होती है, जबकि बाक़ी रबड़ की होती हैं। अगर आप दूसरी गेंदों को गिरा देते हैं, तो वे उछल जाएँगी, लेकिन अगर आप परिवार की गेंद को गिरा देते हैं, तो यह चूर-चूर हो सकती है और कई बार तो इसे दोबारा नहीं जोड़ा जा सकता। इसलिए मेरी सलाह है कि आप परिवार की गेंद की ख़ास परवाह करें, क्योंकि यह क़ीमती और बहुत नाज़ुक होती है।

अंत में, मैं पूँजीवाद के पक्ष में हूँ। मुझे यक़ीन है कि हम एक ऐसे समय और स्थान पर हैं, जहाँ सारी चीज़ें सचमुच संभव हैं और आपकी सोच का स्तर ही अंततः आपके प्रभाव और आपकी आमदनी के स्तर को तय करता है! इसलिए मेरी सलाह है कि आप बड़े सपने देखें, बड़ा सोचें, बड़े काम करें और बड़े तरीक़े से लाभ काटें!

अब जब आप यह जान चुके हैं कि मैं कहाँ खड़ा हूँ, तो आप उसे समझ सकते हैं जो मुझे कहना है और यह भी कि मैं उसे क्यों कह रहा हूँ। अब आप आगे आने वाली जानकारी को ग्रहण कर सकते हैं और ज़्यादा महान अस्तित्व तथा बेहतर जीवन बना सकते हैं! तो आइए आगे बढ़ते हैं! आइए बड़े बनते हैं! आइए इन विपत्तियों को संपत्तियों में बदलते हैं!

प्रस्तावना

विपत्तियों को सफलता में बदलने के रहस्य

हम सभी के जीवन में विपत्तियाँ आएँगी - शायद नहीं, संभवतः नहीं, बल्कि निश्चित रूप से। हम सभी के जीवन में विपत्तियाँ आएँगी। विपत्तियों को संपत्तियों में कैसे बदलें, इस बारे में बात करने से पहले हमें विपत्तियों को सफलता में बदलने की बुनियादी बातों की समीक्षा कर लेनी चाहिए। अपनी पुस्तक *संकट ही सफलता की नींव है* के लिए मैंने उन लोगों से बातचीत की थी, जिनके सामने बहुत बड़े संकट आए थे, लेकिन वे उन्हें अद्भुत सफलताओं में बदलने में कामयाब रहे थे। मैंने जिन लोगों के बारे में बात की थी, उनमें से कुछ मशहूर थे, जैसे ली आयाकोका, वैली फ़ेमस एमॉस और लेस ब्राउन। लेकिन वे मशहूर थे... उन लोगों के बारे में क्या, जो हो सकता है उतने मशहूर न रहे हों या जिनके पास बहुत सारा पैसा न रहा हो? क्या ये सिद्धांत उनके लिए भी काम करेंगे? जवाब ज़ोरदार "हाँ!" था। वास्तव में, जिन कहानियों ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रेरित किया, वे रोज़मर्रा के उन लोगों की कहानियाँ थीं, जिनके जीवन में विपत्तियाँ आई थीं और जिन्होंने उन्हें भारी सफलता में बदला था।

उस युवक की तरह, जिससे मेरी बातचीत हुई थी। उसका एक छोटा कारोबार और दो छोटे बच्चे थे। वह अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए जूझ रहा था। अपने व्यवसाय में उसके सामने एक संकट आया, जिसमें वह दिवालिया हो गया। उसने अपना मकान खो दिया और सड़क पर आ गया, लेकिन यह उसकी कहानी का अंत नहीं था। उसने वापसी की! उसने कमाल की वापसी की। उसने आगे चलकर डामार्क नामक कंपनी बनाई, जो अमेरिका की सबसे बड़ी क्रय-विक्रय कंपनियों में से एक है।

या उस महिला के बारे में, जिससे मेरी बातचीत हुई। श्रीमती डोरिस डेबो नवें ग्रेड की गणित की शिक्षक थीं, जिन्हें कैंसर बताया गया और यह कहा गया कि वे कुछ महीने ही ज़िंदा रह पाएँगी। वे यह सुनकर स्तब्ध रह गईं, लेकिन उन्होंने ठान लिया कि वे नहीं मरेंगी। उन्होंने डॉक्टरों से नज़रें मिलाकर कहा, "मैं जल्दी नहीं मरूँगी। मैं 25 साल और जिऊँगी,

क्योंकि मुझे बहुत सारे बच्चों को पढ़ाना है!" मुझे यह कहते हुए ख़ुशी हो रही है कि मैंने उनके साथ उनका 83 वाँ जन्मदिन मनाया और जब वे गुज़रीं, तो वे कैंसर से नहीं मरीं (उन्होंने कैंसर को चार बार हराया), इसके बजाय वे बुढ़ापे से मरीं। मैंने उनकी अंत्येष्टि में बोला था। हमने उनके जीवन का जश्न मनाया और यह भी उल्लेख किया कि कैसे उन्होंने कैंसर को हराने का लक्ष्य हासिल किया। डॉक्टरों ने उन्हें छह महीने का समय दिया था, लेकिन वे उसके बाद 25 साल से ज़्यादा समय तक जीवित रहीं। अपनी पुस्तक *संकट ही सफलता की नींव है* में मैंने श्रीमती डेबो का एक शक्तिशाली उद्धरण दिया है। उन्होंने कहा था, "अपनी पुस्तक में लोगों को बताएँ कि हो सकता है कि मुझे कैंसर हो, लेकिन कैंसर ने मुझ पर विजय नहीं पाई है। उन्हें यह भी बता देना कि डॉक्टर आपकी बीमारी बता सकते हैं, लेकिन ईश्वर आपका इलाज बताता है!"

मेरी एक महिला से भी बातचीत हुई, जो कंपनी की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ रही थी, लेकिन शिखर पर पहुँचने से पहले ही उसे उम्र की वजह से नौकरी से निकाल दिया गया। कंपनी में इतना ज़्यादा योगदान देने के बाद नौकरी से निकलने पर वह हताश हो गई। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। वह लड़ती रही - और अंततः वह वापस लौटी और उसने कंपनी ख़रीद ली!

पूरी पुस्तक में मैंने उन लोगों की एक के बाद एक कहानी बताई थी, जिन पर विपत्तियाँ आई थीं और जिन्होंने उन्हें वापसी में बदला। मैंने सीखा कि सारी कहानियों में एक स्पष्ट साझा सूत्र था। ये चार आम तत्व हैं: भविष्यदृष्टि की शक्ति, निर्णय की शक्ति, कार्य की शक्ति, और इच्छा की शक्ति।

1 . अपनी भविष्यदृष्टि केंद्रित करें

> *जहाँ भविष्यदृष्टि नहीं होती, वहाँ लोग नष्ट हो जाते हैं...*
>
> **—प्रोवर्ब्स** 29:18

आप अपनी एकाग्रता और अपनी ऊर्जा कहाँ रखते हैं, उसी से यह तय होगा कि आप कहाँ जाएँगे। अगर आप विपत्ति और उसके द्वारा पेश की गई चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप प्रभावी ढंग से आगे नहीं बढ़ सकते। लेकिन जब आप अपनी एकाग्रता को अपनी भविष्यदृष्टि या इस सपने पर केंद्रित करते हैं कि आप क्या बनना चाहते हैं - विपत्ति के बावजूद - तो आप उस विपत्ति का इस्तेमाल उसी तरह कर रहे हैं, जो यह सचमुच है: एक संक्रांति काल।

चूँकि हम सभी किसी न किसी समय किसी न किसी तरह के परिवर्तन या विपत्ति से गुज़रेंगे, इसलिए बाधाओं के पार देखने की क्षमता और अपनी भावी रणनीतियों की योजना बनाना महत्त्वपूर्ण है। अपनी नई कारोबारी एकाग्रता विकसित करने के लिए ख़ुद से ये सवाल पूछें:

- वह बड़ी तस्वीर क्या है, जो मेरे भविष्य के लिए मेरे पास है?
- मैं इस विपत्ति को दोबारा होने से रोकने के लिए क्या अलग कर सकता हूँ?
- अगले तीन, छह और बारह महीनों में मैं अपनी कंपनी को कौन से लक्ष्य (बिक्री, उत्पाद विकास, ग्राहक बनाए रखना आदि) हासिल करते देखना चाहता हूँ?
- मैं इस विपत्ति का इस्तेमाल सीखने के अनुभव के रूप में कैसे कर सकता हूँ?

अपनी नई कारोबारी एकाग्रता विकसित करने के लिए इन प्रश्नों के जवाबों से मार्गदर्शन लें।

2 . एक निर्णय लें

सफलता और असफलता दोनों ही निर्णय हैं। एक बार जब आपकी भविष्यदृष्टि सही जगह पर आ जाती है, तो आपको यह ठान लेना चाहिए कि आप विपत्ति के बावजूद जीतने जा रहे हैं। सच्चाई यह है कि सफल व्यवसायी सफल होने का चुनाव करते हैं। वे समझते हैं कि निर्णय और चयन सफलता के फ़ॉर्मूले के अखंड हिस्से हैं। चाहे सामने कोई भी विपत्ति हो, वे इससे उबरने और विजयी होने का निर्णय लेते हैं।

आपको किसी विपत्ति से उबरने के लिए अपने व्यवसाय के लिए जो निर्णय लेने होंगे, उनमें ये शामिल हैं:

- *मेरे सलाहकार कौन हैं?* जो नकारात्मक सलाहकार विपत्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वे उससे उबरने में आपकी मदद नहीं करेंगे। आपको सकारात्मक सलाहकारों के साथ जुड़ने का निर्णय लेना चाहिए, जो आपकी भविष्यदृष्टि या सपने के अनुरूप सोचते हों।
- *क्या मेरा नया लक्ष्य पर्याप्त बड़ा है?* आपके सामने विपत्ति है, इसका यह मतलब नहीं है कि आप दोबारा छोटे से शुरू करें। पहले बड़ी तस्वीर देखने का निर्णय लें। इसके बाद उस लक्ष्य से पीछे चलते हुए अपना रास्ता तय करें।
- *अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मुझे कौन से क़दम उठाने होंगे?* योजना बनाएँ और निर्णय लें कि आप अपने नए लक्ष्य तक पहुँचने के लिए स्पष्टता से क्या करने वाले हैं। मिसाल के तौर पर, अगर आपका लक्ष्य बिक्री को 33 प्रतिशत बढ़ाना है, तो लिख लें कि आप इसे हासिल करने के लिए क्या करेंगे और इस लक्ष्य तक पहुँचने की समयसीमा क्या है।

3 . कर्म करें

कर्म के बिना निर्णय सिर्फ़ एक भ्रम है और भविष्यदृष्टि के बिना कर्म बस एक दुविधा है। लेकिन भविष्यदृष्टि और निर्णयात्मक कर्म से संसार बदल सकता है।

एक बार जब आप अपने नए कारोबारी स्वप्न को हक़ीक़त बनाने के विभिन्न घटक तय कर लेते हैं, तो आपको उनमें से प्रत्येक पर काम करना चाहिए। दुर्भाग्य से कई कारोबारी

लोग अपने निर्णयों पर कभी काम नहीं करते हैं। हालाँकि वे अपने नए कारोबारी सपने को हक़ीक़त बनाने का पूरा इरादा रखते हैं, लेकिन उनमें संकल्प और कर्म करने से उत्पन्न लगन नहीं होती।

किसी निर्णय पर कर्म करके आप विपत्ति की ज़िम्मेदारी भी ले रहे हैं। "डिसीजन" (निर्णय) शब्द ग्रीक शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है "काटना।" जब आप चीरा लगाते हैं, तो आप "अंदर" काटते हैं और जब आप निर्णय लेते हैं, तो आप "बाक़ी सारी चीज़ों को" काट देते हैं! ज़िम्मेदारी लें और उन लोगों, स्थानों व चीज़ों को काट दें, जो आपको अपने सपने को जीने से रोक सकती हैं। एक बार जब आप अपने कामों की ज़िम्मेदारी ले लेते हैं, तो आप आगे बढ़ने और अपना अगला लक्ष्य हासिल करने के लिए तैयार हो जाते हैं। याद रखें, हो सकता है कि आप गिरने के लिए ज़िम्मेदार न हों, लेकिन आप दोबारा उठने के लिए ज़रूर ज़िम्मेदार हैं। जो लोग काम करते हैं, केवल वही अपने लक्ष्य हासिल कर पाते हैं।

4 . इच्छा रखें

इच्छा ऊर्जा का वह स्तर है, जो आप अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए लगाना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में, आप कितनी शिद्दत से चाहते हैं कि आपका कारोबार बचा रहे और आप कारोबारी सफलता हासिल करने के लिए क्या करने को तैयार हैं?

कल्पना करें कि मैं आपको एक बड़े फ़ुटबॉल स्टेडियम में ले जाता हूँ और आपको बताता हूँ कि फ़ुटबॉल के उस मैदान में कहीं पर 10 लाख डॉलर गड़े हुए हैं - और फिर मैं आपको एक फावड़ा देता हूँ। क्या आप खुदाई करने में रुचि लेंगे? ज़्यादातर लोग कहेंगे, "हाँ!" मेरा मानना है कि हालाँकि आपको इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं होगा कि कहाँ खुदाई शुरू करनी है या कितना गहरा खोदना है, लेकिन ज़्यादातर लोग दस लाख डॉलर के लिए खुदाई करने के इच्छुक होंगे। वास्तव में, टेलीविज़न रिएलिटी शो में बहुत से लोग जैकपॉट जीतने के लिए केंचुए तक खा लेते हैं और विचित्र करतब दिखाते हैं, इसलिए मुझे लगता है कि फ़ुटबॉल के मैदान की खुदाई करना इतना बुरा नहीं है! मुद्दे की बात यह है कि आप बाहर जाकर इस उम्मीद से खुदाई करने को तैयार हैं कि आपके प्रयासों के लिए वहाँ पर एक पुरस्कार है। आपमें खुदाई करने और अपने सपनों की ख़ातिर लड़ते रहने का संकल्प होना चाहिए। आपको अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए संकल्पवान और लगनशील होना चाहिए। मैं मानता हूँ कि यही ज़िंदगी के बारे में सही है! संसार में लाखों-करोड़ों डॉलर हैं, जिन पर आपका नाम लिखा है और जो आपका इंतज़ार कर रहे हैं... लेकिन पैसा पाने के लिए आपको संकल्पवान और लगनशील होना चाहिए - और आपको खुदाई करते रहना चाहिए!

जो लोग कर्म में जुटते हैं, उनमें से कई जल्दी ही हार मान लेते हैं, क्योंकि उनकी इच्छा जवाब दे जाती है। या तो उनके मन में कोई नया विचार आ जाता है और वे एकाग्रता खो

देते हैं या फिर उनका सामना किसी छोटी-मोटी विपत्ति से हो जाता है और वे हताश हो जाते हैं। आपने अपने लिए जो नया कारोबारी लक्ष्य तय किया है, उस तक पहुँचने के लिए आपमें हर काम को लगातार पूरा करने की इच्छा होनी चाहिए, भले ही इसमें जोखिम शामिल हो। हालाँकि जोखिम लेने से डर लग सकता है, ख़ास तौर पर विपत्ति के बाद, लेकिन आपके नए लक्ष्य तक पहुँचने के लिए यह एक आवश्यक घटक है। विपत्ति को वापसी में बदलने के लिए आपको पहलशक्ति और कर्म की ज़रूरत होगी। पहलशक्ति तथा कर्म में हमेशा जोखिम शामिल होता है: कोई हिम्मत नहीं, तो कोई शोहरत नहीं - कोई जोखिम नहीं, तो कोई पुरस्कार नहीं! प्रगति में हमेशा जोखिम शामिल होता है। अगर आप पहला बेस छोड़ने से डरते हैं, तो आप दूसरे बेस तक नहीं पहुँच सकते।

यह निर्णय लें कि आप कितनी शिद्दत से लक्ष्य तक पहुँचना चाहते हैं, और फिर इसके पीछे तब तक जुटे रहें, जब तक कि आप इसे हासिल न कर लें। याद रखें, विपत्ति "अगर" वाला मामला नहीं है; यह तो "कब" वाला मामला है। जब कोई विपत्ति आपके जीवन में आती है, तो आपको यह चेतन निर्णय लेने की ज़रूरत होती है कि आप इसे समस्या के रूप में नहीं, बल्कि सीखने के अवसर के रूप में देखेंगे। आपको समाधान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और यह निर्णय लेना चाहिए कि आप उस विपत्ति के बारे में क्या करने वाले हैं।

जब मैंने *संकट ही सफलता की नींव है* के लिए लोगों से बातचीत की, तो मुझे उनकी कहानियों में एक जैसे घटक नज़र आए - भविष्यदृष्टि, निर्णय, कर्म और इच्छा। मैंने इन सरल क़दमों पर और शोध किया, जिसे हमारे संकटों को विजय में बदलने के लिए हमारी रोज़मर्रा की गतिविधियों में लागू किया जा सकता था। इस तरह मैंने आपके संकटों को विजय में बदलने के लिए 12 क़दमों की एक योजना बनाई! ये 12 क़दम हैं:

1. *अपने दृष्टिकोण की जाँच करें।* आप जो देखते हैं, वही पाते हैं! ऐसी बात नहीं है कि देखना ही विश्वास करना है; बात तो यह है कि विश्वास करना ही किसी चीज़ को अंततः साकार करने और देखने की कुंजी है!
2. *पहचानें कि यह जीवन है।* जीवन 101 में कहा गया है, "कुछ दिन आप विंडशील्ड होते हैं और कुछ दिन आप कीड़े होते हैं!" जीवन होता है - विपत्तियाँ हर एक के सामने आती हैं, लेकिन अंततः आपके नज़रिये से ही फ़र्क़ पड़ता है।
3. *अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें।* अगर सपना पर्याप्त बड़ा है, तो समस्याएँ मायने नहीं रखती हैं। सपना जितना ज़्यादा बड़ा होता है, पुरस्कार भी उतना ही ज़्यादा बड़ा होता है।
4. *मुश्किल निर्णय लें।* अब जब विपत्ति आपके सामने आकर खड़ी हो गई है, तो आप इसके बारे में क्या करने जा रहे हैं? मायने यह नहीं रखता कि आपके साथ क्या होता है; मायने तो यह रखता है कि आप इसके बारे में क्या करते हैं!

5. *सकारात्मक रहने का निर्णय लें।* सकारात्मक लोगों में ज़्यादा लंबा जीने की प्रवृत्ति होती है और वे यात्रा का ज़्यादा आनंद भी लेते हैं!
6. *रुकें और सोचें।* क़दम पीछे हटाएँ, अंदर देखें, जाँच करें और ऊँचा सोचें! अपने सारे विकल्पों को देखें। आपके पास विकल्प हमेशा होते हैं। सफलता की कुंजी समझदारीपूर्ण विकल्प चुनना है।
7. *कर्म करें।* हो सकता है कि आपके पास लाइट और कैमरा हों, लेकिन जब तक आप एक्शन न करें, तब तक कुछ भी नहीं होता! कई लोग अपने सपनों को जीने की बात करते हैं, लेकिन जो लोग अपने सपनों पर काम करते हैं, सिर्फ़ वही उन्हें साकार कर पाते हैं।
8. *ज़िम्मेदारी लें।* इसका सामना करें, इसे पहचानें, इसे मिटाएँ और इसकी जगह नया बनाएँ। सबसे पहले समस्या का सामना करें। फिर, समस्या को पहचानें और इससे सीखें, समस्या को मिटा दें - इसके बारे में सोचते न रहें। अंततः समस्या की जगह कुछ और रख लें - अपने जीवन में नकारात्मक की जगह कुछ सकारात्मक और प्रेरित रख लें।
9. *अपने क्रोध का इस्तेमाल करें।* इसका इस्तेमाल भलाई के लिए करें! अंग्रेज़ी शब्द एंगर (anger) और डेंजर (danger) में सिर्फ़ “डी” अक्षर का फ़र्क़ होता है। “डी” अनुशासन (discipline) के लिए है! क्रोध एक स्वाभाविक भाव है - कुंजी अनुशासित रहना है।
10. *आस्था रखें,* और ख़ुद को याद दिलाएँ कि आप धन्य और बहुत कृपापात्र हैं! सकारात्मक, साहसी आस्था आपको सबसे मुश्किल यात्राओं के लिए शक्ति दे सकती है।
11. *जीतने का संकल्प लें,* हारने से इंकार करें और कभी हिम्मत न हारें! कभी, कभी, कभी हार न मानें! विजेता कभी मैदान नहीं छोड़ते और मैदान छोड़ने वाले कभी नहीं जीतते!
12. *कृतज्ञता का नज़रिया रखें!* हर बोझ में वरदान खोजना सीखें। हर दिन के लिए कृतज्ञ बनें!

हर सफल व्यक्ति के जीवन में विपत्तियाँ आती हैं; लेकिन उसे अहसास होता है कि विपत्ति राह का अंत नहीं है, बल्कि सड़क का एक मोड़ है और सिर्फ़ वही लोग दुर्घटनाग्रस्त होते हैं, जो मुड़ नहीं पाते हैं। जब आप अपनी विपत्ति को भावी विकास के अवसर के रूप में देखते हैं, तो हर चुनौती का सकारात्मक परिणाम हो सकता है। इस तरह हर व्यक्तिगत विपत्ति को अंततः अविश्वसनीय सफलता की नींव के रूप में देखा जा सकता है।

क्या आप गंभीर हैं?

जब मैं नाइटक्लब गायक था, तब मेरा एक मित्र था। एक दिन मुझे उसकी चिट्ठी मिली। उसने कहा कि उसने मुझे टेलीविज़न पर देखा था और वह जानना चाहता था कि मैंने अपनी ज़िंदगी बदलने के लिए क्या किया। मैंने उसे बताया कि जिस नाइटक्लब को मैंने वॉशिंगटन डीसी के शीर्षस्थ नाइटक्लबों में से एक बनाया था, जब उस नाइटक्लब से मुझे निकाल दिया गया, क्योंकि बैंड को पैसे देने के बजाय कराओके मशीन ख़रीदना ज़्यादा सस्ता था, तो मैंने बदलने का निर्णय लिया... और जैसा जिम रॉन कहते हैं, "एक बार जब आप बदल जाते हैं, तो आपके लिए हर चीज़ बदल जाती है!"

मैंने उसे बताया कि मैंने विकास करने और अपनी सोच का विस्तार करने का संकल्प लिया। मैंने स्व-विकास का कोर्स शुरू किया और सकारात्मक संदेशों वाली पुस्तकें पढ़ने, प्रेरक टेप सुनने और बहुत से प्रेरक सेमिनारों तथा रैलियों में शिरकत करने का संकल्प लिया। संक्षेप में, मैंने उसे बताया कि मैंने अपनी सफलता के बारे में गंभीर होने का निर्णय लिया। मैंने अपना मन बना लिया था कि मैं हर ज़रूरी चीज़ करूँगा, ताकि मैं अपना विकास ऐसे व्यक्ति के रूप में कर सकूँ, जो सफलता के लिए तैयार था। मुझे याद है कि लेस ब्राउन ने एक बार मुझे बताया था कि ज़्यादातर लोग, "गंभीरता से, सफलता के बारे में गंभीर नहीं होते हैं।" उन्होंने कहा कि वे इसके बारे में बात करते हैं, और बात करते हैं, और बात करते हैं, लेकिन करते कुछ नहीं हैं। इसलिए मैंने गंभीर होने का मन बना लिया!

मैंने सुबह जल्दी उठने और देर तक जागने का संकल्प लिया। मैंने स्व-विकास के बारे में हर चीज़ पढ़ने का संकल्प लिया। मैंने टेलीविज़न का बटन बंद कर दिया और पुस्तकों तथा ऑडियो में अपने समय का भारी निवेश किया। मैंने संकल्प लिया कि मैं फ़ोन उठाकर सेल्स कॉल करूँगा। मैं सुबह जल्दी ही फ़ोन के पास पहुँच जाता था और शाम तक फ़ोन करता रहता था। जब मैं थक जाता था और रुकना चाहता था, तो मैं हमेशा एक और कॉल करता था। मैंने यह संकल्प लिया कि जितने काम के लिए मुझे वेतन दिया जाता था, मैं हर दिन उससे ज़्यादा करूँ; जितने काम की मुझसे अपेक्षा की जाती थी, उससे ज़्यादा काम करूँ; जितना मुझसे कहा जाता था, उससे आगे तक जाऊँ। यह बात सच है कि आपको जितना भुगतान मिलता है, अगर आप उससे ज़्यादा करते हैं, तो एक दिन ऐसा आएगा, जब आप जितना करते हैं, आपको उससे ज़्यादा भुगतान मिलेगा। अगर आप आज वे चीज़ें करते हैं, जिन्हें दूसरे नहीं करना चाहते, तो आपके पास कल वे चीज़ें होंगी, जो दूसरों के पास नहीं होंगी।

मेरे पुराने मित्र ने मुझसे पूछा कि मैं हर दिन तीन चीज़ें कौन सी करता हूँ। मैंने उससे कहा कि मैं हर दिन प्रार्थना और ध्यान से शुरू करता हूँ। मैं हर सुबह बिस्तर से उठते समय ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ और गर्व से घोषणा करता हूँ, "यह वह दिन है, जिसे ईश्वर ने बनाया है और मैं इसमें ख़ुश तथा आनंदित हूँ!" मेरे पास कृतज्ञता का नज़रिया है, क्योंकि मेरे पास बाहर निकलने और अपने सपने जीने का एक और अवसर है!

दूसरे, मैं ख़ुद से पूछता हूँ, "विली, अगर तुम गंभीर होते, तो तुम क्या करते?" एक बार जब मुझे जवाब मिल जाते हैं, तो मैं उन्हें लिख लेता हूँ और फिर अपने सपनों को हक़ीक़त

में बदलने के लिए काम में जुट जाता हूँ। फिर मैं ख़ुद से पूछता हूँ, बेहतर बनने के लिए तुम आज क्या कर सकते हो? मैंने सीखा है कि सफलता व्यक्तिगत और पेशेवर विकास का परिणाम है। बेहतर बनने के लिए दैनिक विकास की ज़रूरत होती है। किसी भी काम में महानता एक दिन में नहीं आ जाती है; यह तो हर दिन की मेहनत से आती है। दैनिक अनुशासन से फ़र्क़ पड़ता है। जिस तरह आप अपनी मांसपेशियों को थोड़ा-थोड़ा करके बढ़ाते हैं, उसी तरह आप अपने विकास और सफलता को भी थोड़ा-थोड़ा, हर दिन बढ़ाते हैं।

मैंने अपने मित्र को बताया कि यह रॉकेट विज्ञान नहीं है। बस इसमें तीन चीज़ों की ज़रूरत होती है - लगन, भूख और संकल्प! सबसे बढ़कर इसमें अपने विकास का संकल्प लेने की ज़रूरत होती है, ताकि हम अपने भविष्य को अंकुरित कर सकें। फिर हमें उस संकल्प को करने का संकल्प लेना चाहिए। इस पुस्तक में मैं इस प्रश्न *'क्या आप गंभीर हैं?'* पर ध्यान केंद्रित करने में आपकी मदद करूँगा।

हर सफल व्यवसायी के सामने विपत्तियाँ आती हैं। लेकिन उसे यह अहसास हो जाता है कि विपत्ति राह का अंत नहीं है, बल्कि राह का मोड़ भर है... और सिर्फ़ वही लोग दुर्घटनाग्रस्त होते हैं, जो मोड़ पर नहीं मुड़ पाते। अपने कारोबार की विपत्ति को भावी विकास के अवसर के रूप में देखने से हर कारोबारी चुनौती का सकारात्मक परिणाम निकल सकता है। इस तरह, हर विपत्ति को एक अविश्वसनीय सफलता की नींव के रूप में देखा जा सकता है।

मुश्किल समय के दौरान जो सवाल बार-बार पूछा जाता है, वह है, "इस अग्निपरीक्षा से हम कैसे बचें?" इसका कोई आसान जवाब नहीं है। ये अवधारणाएँ 1930 के दशक में कारगर थीं; ये अवधारणाएँ बाक़ी मंदियों और हमारे देखे मुश्किल आर्थिक दौर में कारगर रही हैं; ये आज भी आपके लिए काम करेंगी। वास्तव में, हमने देखा है कि इनमें से कई प्रवृत्तियाँ आज भी विद्यमान हैं, जैसी बरसों पहले रही थीं। फ़िल्म स्टूडियोज़ में मंदियों और मुश्किल आर्थिक दौर में सबसे ज़्यादा टिकट बिकते हैं और जो कंपनियाँ होम थिएटर और होम एंटरटेनमेंट में विशेषज्ञता रखती हैं, उनकी बिक्री मुश्किल दौर में बहुत बढ़ जाती है, क्योंकि लोग महसूस करते हैं कि वे बाहरी मनोरंजन का ख़र्च नहीं उठा सकते, इसलिए वे घर पर रुके रहने के लिए भुगतान करते हैं। ऐसे समय में भारी दौलत बनाने के लिए आप अपनी सृजनात्मकता का इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन ये सिद्धांत तभी काम करते हैं, जब आप उन पर काम करना चाहते हों और उन्हें अपने जीवन में मेहनत से उतारना चाहते हों।

वॉरेन बफ़े संसार के सबसे दौलतमंद व्यक्तियों में से एक हैं। उन्होंने कहा था कि मंदियाँ बहुत चुनौतीपूर्ण समय होती हैं, लेकिन वे दौलत बनाने का बेहतरीन समय भी हैं। वे दरअसल इसे "आर्थिक पर्ल हार्बर" कहते हैं, यानी उस वक़्त तो ऐसा लगता है कि हर चीज़ तबाह हो गई है, लेकिन आगे चलकर उस चुनौती से सुंदर पौधे उग आएँगे। बफ़े ने कहा है कि मंदियों और आर्थिक गिरावटों की प्रकृति चक्राकार है - वे पहले भी आ चुकी हैं और

शायद हमारे जीवन में दोबारा आएँगी। उन्होंने यह भी कहा है कि हमें इतिहास से सीखना चाहिए। हमने इससे भी बुरी आर्थिक स्थितियाँ देखी हैं और हर एक का अंत हुआ था तथा अर्थव्यवस्था पहले से बेहतर बनकर उछली थी। उन्होंने कहा कि हर बहाली के साथ उन लोगों के सर्वश्रेष्ठ दिन सचमुच आगे हैं, जो अलग तरीक़े से सोचने के इच्छुक हैं और जो नकारात्मक व्याख्या तथा नकारात्मक नज़रियों को छोड़ देते हैं। वॉरेन बफ़े महसूस करते हैं कि आर्थिक मंदियाँ सकारात्मक नज़रिये वाले लोगों के सामने महान अवसर पेश करती हैं, जिन्होंने नकारात्मक चिंतकों की भीड़ का अनुसरण न करने का संकल्प लिया है।

सीएनबीसी को दिए इंटरव्यू में वॉरेन बफ़े ने कहा था, "बुरी ख़बर डर और चिंता उत्पन्न करती है, लेकिन आपको डर से जूझना चाहिए और यह अहसास करना चाहिए कि समय के साथ हर चीज़ सही हो जाएगी। पूँजीवादी तंत्र कारगर है! कभी-कभार मशीन में गड़बड़ आ जाती है, लेकिन यह ख़ुद को ठीक कर लेगी और आप भरोसा कर सकते हैं कि तंत्र कारगर है!" बफ़े ने इसके बाद बैंकिंग और बचत के बारे में बोलते हुए कहा कि बैंकिंग उद्योग के सबसे अच्छे दिन आने वाले हैं। उनके यह कहते ही वेल्स फ़ार्गो बैंक के शेयर का भाव 24 प्रतिशत से ज़्यादा बढ़ गया!

बफ़े ने अपने श्रोताओं को यह सलाह भी दी कि वे डर और दहशत में न अटकें, बल्कि आशावाद और रोमांच से भविष्य को देखें और उन अवसरों की तलाश करें, जो चारों तरफ़ बिखरे हुए हैं। अंत में, उन्होंने कहा, "जब दूसरे लोग लालची थे (शेयर बाज़ार में इंटरनेट कंपनियों के उछाल और अंततः धड़ाम के दौरान), तब मैं शांत था! लेकिन जब दूसरे डर रहे थे, तब मैं लालची बन गया!"

मैं वॉरेन बफ़े की बात से सहमत हूँ: आर्थिक मंदियों में हमें अतीत में विद्यमान स्वरूपों की जाँच करनी चाहिए और आशावाद से भविष्य की ओर देखना चाहिए। यह अवसरों की तलाश करने, संभावनाओं को देखने और साहसी बनने का समय है। जो लोग अलग सोचते हैं और अपनी आँखें अवसरों तथा संभावनाओं के प्रति खोल लेते हैं, वही संपन्न होंगे। जैक एडगेट ने लिखा था, "हर मंदी में आम क्या होता है? जब मंदी का अंत होता है, तो अलग-अलग कंपनियों को बहुत अलग-अलग परिणाम मिलते हैं। 1990 की मंदी के अंत में वॉलमार्ट सियर्स से आगे निकल गई थी, जिलेट ने कोलगेट-पामोलिव को हरा दिया था और मेरिल लिंच ने बियर स्टर्न्स को पछाड़ दिया था।" इतिहास ने साबित कर दिया है कि यह हर मंदी या गिरावट के बारे में सच है, साथ ही आपके व्यक्तिगत इतिहास के बारे में भी... अगर आप हार नहीं मानते हैं, तो आप अपनी विपत्तियों को संपत्तियों में बदल सकते हैं।

मुख्य प्रश्न यह है कि आप किसी विपत्ति (जैसे कोई मंदी या व्यक्तिगत आर्थिक गिरावट) को निराशाजनक समस्या के रूप में देखते हैं या फिर रणनीतिक अवसर के रूप में? जब आप उस विपत्ति से उबर जाते हैं, तो आपके हिसाब से आपका जीवन और कारोबार कैसा दिखना चाहिए?

मुझे यक़ीन है कि परिवर्तनशील और चुनौतीपूर्ण समय में अलग तरीक़े से सोचना ज़रूरी है! आपको अलग काम करने का इच्छुक होना होगा! आपको कुछ काम अलग तरीक़े से करने का इच्छुक होना होगा! इस पुस्तक में मैं आपको कुछ विचार और रणनीतियाँ बताऊँगा, जो अलग तरीक़े से सोचने और समृद्ध होने में आपकी मदद करेंगी। ये विचार केवल बचने में ही नहीं, बल्कि समृद्ध होने में आपकी मदद करेंगे और इनकी मदद से आप किसी भी आर्थिक विपत्ति को संपत्ति में बदल सकते हैं!

कम चली गई राह

जब हम बड़े होते हैं, तो हम एक के बाद दूसरे चुनौतीपूर्ण अनुभव से गुज़रते हैं। जैसा एम. स्कॉट पेक ने अपनी मशहूर पुस्तक *द रोड लेस ट्रैवल्ड* की पहली पंक्ति में कहा था, "जीवन मुश्किल है।" बात ख़त्म! उन्होंने सही कहा है, जीवन मुश्किल है। जीवन चुनौतीपूर्ण है। ऐसा समय होता है, जब जीवन सरासर पक्षपाती नज़र आता है। लेकिन फिर भी जीवन जीने लायक़ है। जिन चुनौतियों और मुश्किलों को हम सभी को झेलना ही होगा, उनके बावजूद जीवन एक सुंदर चीज़ है! मेरी डेस्क पर एक तख़्ती है, जिस पर लिखा है, "अद्भुत होने के लिए जीवन का आदर्श होना जरूरी नहीं है!"

इतने बरसों में मैंने अक्सर ज़्यादा बड़े लोगों को कहते सुना है, "अगर आपके जीवन में अब तक मुश्किल समय नहीं आया है, तो बस जीते रहें!" हम सभी के जीवन में कुछ मुश्किल समय रहते हैं और अंततः हमारे जीवन में कुछ विपत्तियाँ होंगी। हम सभी कुछ चुनौतीपूर्ण समय का अनुभव करेंगे, लेकिन चुनौतियों के बीच में महान अवसर भी होते हैं। हम सभी के जीवन में संकट के कुछ समय आएँगे, लेकिन हमारे भविष्य की संभावनाएँ देखने के लिए हमें पहले संकट की परिभाषा को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

हम लगातार सुनते हैं कि हम एक संकट के बीच में हैं। मैं सहमत हूँ कि हम संकट के बीच में हैं, लेकिन मैं संकट की परिभाषा से सहमत नहीं हूँ। हम आम तौर पर संकट को किसी आपदा, चोट, दर्द और निराशा का समय मान लेते हैं। हाँ, इस मुश्किल समय में चोट, दर्द और निराशा है, लेकिन यह पूरी स्थिति नहीं है। संकट एक रोचक शब्द है, क्योंकि इसमें एक तरफ़ तो भारी चुनौती और मुश्किल है, जबकि दूसरी तरफ़ महान अवसर है! नेपोलियन हिल ने अपनी मशहूर पुस्तक *थिंक एंड ग्रो रिच* में लिखा है, "हर विपत्ति में हमेशा समान या ज़्यादा लाभ के बीज होते हैं।" इस भावना से मैं कुछ विचार बताना चाहूँगा और मुझे यक़ीन है कि इनसे आपको इस संकट से गुज़रने में मदद मिलेगी। मुझे आशा है कि आप पहले से महान और बेहतर बनकर अपनी विपत्ति के पार पहुँचेंगे!

जब हम इस आर्थिक सफलता के विशिष्ट क़दमों में जाते हैं, तो मेरा लक्ष्य आपको कुछ विशिष्ट रणनीतियाँ देना है, सिर्फ़ इस चुनौतीपूर्ण समय में बचने के बारे में ही नहीं, बल्कि समृद्ध होने के बारे में भी।

वॉरेन बफ़े की बात सही थी: यही समय है! यही विपत्तियों को संपत्तियों में बदलने का समय है! हम इससे गुज़र जाएँगे! यह सफलता से जीतने का समय है! अपनी अविश्वसनीय वापसी के लिए तैयार हो जाएँ! इस आर्थिक विपत्ति को संपत्ति में बदलने के लिए तैयार हो जाएँ! आइए इसे संभव बनाएँ!

अब हम विपत्तियों को संपत्तियों में बदलने के सात क़दमों पर आते हैं!

1

अपनी मानसिकता बनाएँ... दबाव बनाए रखें, लेकिन दहशत में न आएँ

(क्योंकि दबाव से हीरे बनते हैं,
जबकि दहशत से तबाही आती है)

मुश्किलें हमेशा हारती हैं, लेकिन जीवट वाले लोग हमेशा जीतते हैं!

—डॉ. रॉबर्ट शुलर

पैसे संबंधी चुनौतियाँ किसी न किसी समय हर एक के जीवन में आती हैं। मैं जानता हूँ कि यह आनंददायक समय नहीं होता। दरअसल मैं जानता हूँ कि यह इसके ठीक विपरीत होता है - यह कष्टदायक होता है। जब हम पर कोई आर्थिक विपत्ति आती है, चाहे यह व्यक्तिगत स्तर पर हो या ज़्यादा बड़े स्तर पर (जैसे: आर्थिक मंदी या डिप्रेशन), तो हमारे भीतर नियंत्रण खोने की बेचैन करने वाली भावना आ सकती है, जो हमारे संतुलन को डगमगा सकती है, और यह एक ऐसी भावना है जिसे हममें से कोई भी पसंद नहीं करता। अक्सर नियंत्रण खोने के साथ दबाव और तनाव का स्तर भी बढ़ जाता है। जब आप कड़के होते हैं, तंगी में होते हैं और नाउम्मीद होते हैं, तो ध्यान को एकाग्रचित्त करना और एक ऐसा भविष्य देखना मुश्किल होता है, जहाँ पैसे की कोई तंगी न हो और बिल चुकाना इतना मुश्किल न हो। मुझे अपने मित्र डॉ. बीचर हिक की यह बात बड़ी पसंद है: "जब पैसा अजीब हरकतें करता है और परिवर्तन अजीब होता है, तो दबाव और भी बढ़ जाता है!" लेकिन अच्छी ख़बर... सचमुच अच्छी ख़बर... यह है कि इस समस्या का एक समाधान है और यह आपकी सोच से शुरू होता है!

सबसे पहले, अपनी मानसिकता बनाएँ

मैं कठोर आर्थिक दौर के दबाव में रह चुका हूँ और इस प्रक्रिया में मैंने कुछ मूल्यवान सबक़ सीखे हैं। मैंने यह सीखा कि दबाव दरअसल आपकी ज़िंदगी में हीरे बना सकता है, लेकिन